



Miss Akruti Sharma

26 May 2023

06:56 PM

Jamshedpur

Model: Web-MyKundli

Order No: 119532701

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 26/05/2023
दिन _____: शुक्रवार
जन्म समय _____: 18:56:00 घंटे
इष्ट _____: 34:46:49 घटी
स्थान _____: Jamshedpur
राज्य _____: Jharkhand
देश _____: India

अक्षांश _____: 22:47:00 उत्तर
रेखांश _____: 86:12:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:14:48 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 19:10:48 घंटे
वेलान्तर _____: 00:03:00 घंटे
साम्पातिक काल _____: 11:26:15 घंटे
सूर्योदय _____: 05:01:16 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:23:21 घंटे
दिनमान _____: 13:22:05 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: ग्रीष्म
सूर्य के अंश _____: 10:52:43 वृष
लग्न के अंश _____: 18:51:17 वृश्चिक

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृश्चिक - मंगल
राशि-स्वामी _____: कर्क - चन्द्र
नक्षत्र-चरण _____: आश्लेषा - 4
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: ध्रुव
करण _____: वणिज
गण _____: राक्षस
योनि _____: मार्जार
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: डो-डौली
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मिथुन

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1945	ज्येष्ठ	5
पंजाबी	संवत : 2080	ज्येष्ठ	12
बंगाली	सन् : 1430	ज्येष्ठ	11
तमिल	संवत : 2080	वैकासी	12
केरल	कोल्लम : 1198	इदवम	12
नेपाली	संवत : 2080	ज्येष्ठ	12
चैत्रादि	संवत : 2080	ज्येष्ठ	शुक्ल 6
कार्तिकादि	संवत : 2080	ज्येष्ठ	शुक्ल 6

पंचांग

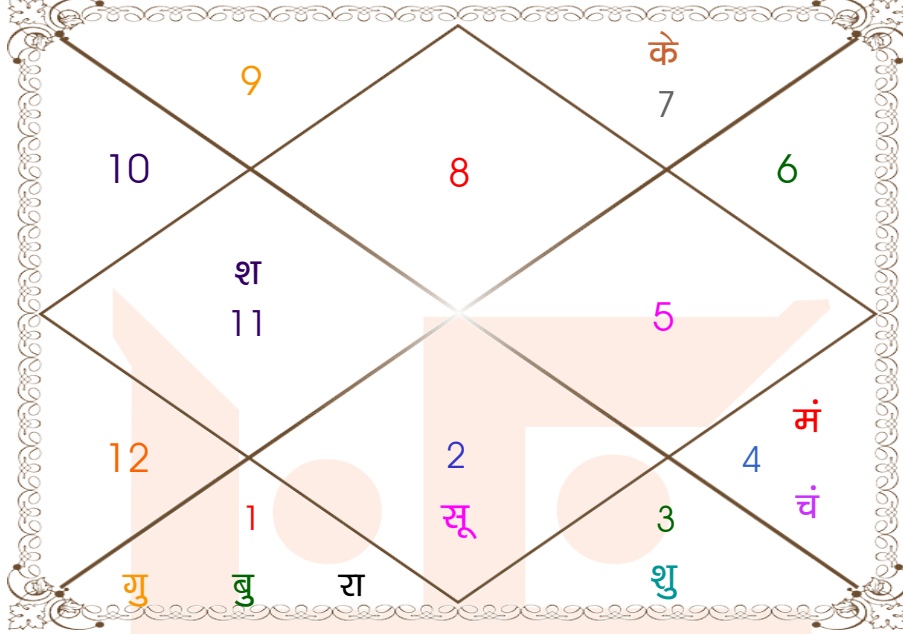
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 6
तिथि समाप्ति काल _____ : 05:19:52
जन्म तिथि _____ : 7
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : आश्लेषा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 20:49:38 घंटे
जन्म योग _____ : आश्लेषा
सूर्योदय कालीन योग _____ : ध्रुव
योग समाप्ति काल _____ : 19:02:32 घंटे
जन्म योग _____ : ध्रुव
सूर्योदय कालीन करण _____ : तैत्तिल
करण समाप्ति काल _____ : 05:19:52 घंटे
जन्म करण _____ : वणिज
भयात _____ : 62:36:56
भभोग _____ : 67:20:59
भोग्य दशा काल _____ : बुध 1 वर्ष 2 मा 10 दि

घात चक्र

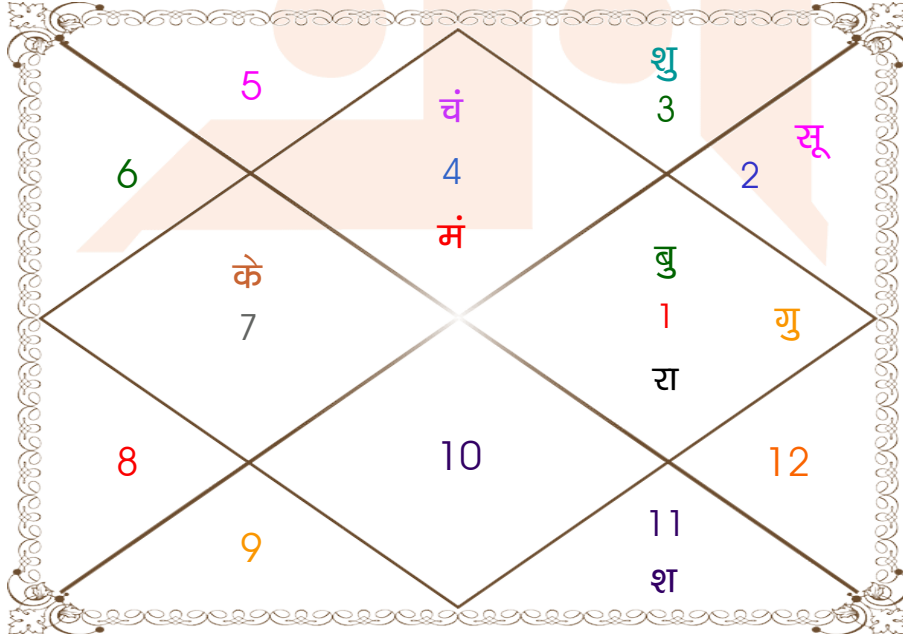
मास _____ : पौष
तिथि _____ : 2-7-12
दिन _____ : बुधवार
नक्षत्र _____ : अनुराधा
योग _____ : व्याघात
करण _____ : नाग
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मेष
लग्न _____ : तुला
सूर्य _____ : सिंह
चन्द्र _____ : मीन
मंगल _____ : कन्या
बुध _____ : मिथुन
गुरु _____ : तुला
शुक्र _____ : वृश्चिक
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : धनु

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



Santosh Jyotish Vani

Suraj Kumar Roy (M.A. JYOTISH, JYOTISH PRABHAKAR, NUMEROLOGY PROFESSIONAL, M.A. ECONOMICS, M.COM FINANCE, B.ED)

A-86 flat no 06 street 10 chander vihar ip extension

9654081887

mail2suraj7836@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

	रा बु गु	सू	शु
श			मं चं
	ल	के	

लग्न कुंडली

	सू	रा बु गु	
शु			श
मं चं			
		के	ल

विंशोत्तरी
बुध 1वर्ष 2मा 10दि
बुध

26/05/2023

06/08/2127

बुध	05/08/2024
केतु	05/08/2031
शुक्र	05/08/2051
सूर्य	05/08/2057
चन्द्र	05/08/2067
मंगल	05/08/2074
राहु	05/08/2092
गुरु	06/08/2108
शनि	06/08/2127

योगिनी
भ्रामरी 0वर्ष 3मा 11दि
भद्रिका

06/09/2023

05/09/2028

भद्रिका	17/05/2024
उल्का	17/03/2025
सिद्धा	07/03/2026
संकटा	17/04/2027
मंगला	07/06/2027
पिंगला	16/09/2027
धान्या	15/02/2028
भ्रामरी	05/09/2028

Santosh Jyotish Vani

Suraj Kumar Roy (M.A. JYOTISH, JYOTISH PRABHAKAR, NUMEROLOGY PROFESSIONAL, M.A. ECONOMICS, M.COM FINANCE, B.ED)

A-86 flat no 06 street 10 chander vihar ip extension

9654081887

mail2suraj7836@gmail.com

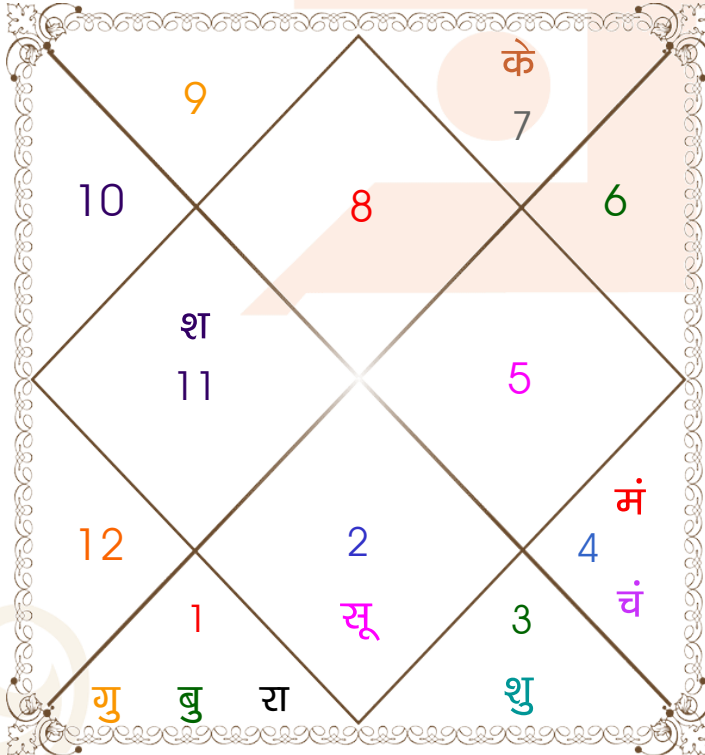
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृश्चि	18:51:17	318:01:14	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	केतु	---
सूर्य			वृष	10:52:43	00:57:38	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	चंद्र	शत्रु राशि
चंद्र			कर्क	29:03:47	11:52:20	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	शनि	स्वराशि
मंगल			कर्क	09:12:23	00:34:32	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	शुक्र	नीच राशि
बुध			मेष	16:26:35	00:48:01	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	चंद्र	सम राशि
गुरु			मेष	08:01:47	00:13:14	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	गुरु	मित्र राशि
शुक्र			मिथु	25:56:57	01:01:02	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	केतु	मित्र राशि
शनि			कुंभ	12:37:37	00:02:09	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	बुध	मूलत्रिकोण
राहु	व		मेष	09:22:34	00:01:31	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	शनि	शत्रु राशि
केतु	व		तुला	09:22:34	00:01:31	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	गुरु	सम राशि
हर्ष			मेष	25:42:57	00:03:23	भरणी	4	2	मंगल	शुक्र	बुध	---
नेप			मीन	03:10:17	00:01:07	पूर्वाभाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	---
प्लूटो	व		मक	06:02:32	00:00:40	उत्तराषाढा	3	21	शनि	सूर्य	बुध	---
दशम भाव			सिंह	26:37:54	--	पूर्वाफाल्गुनी	--	11	सूर्य	शुक्र	केतु	--

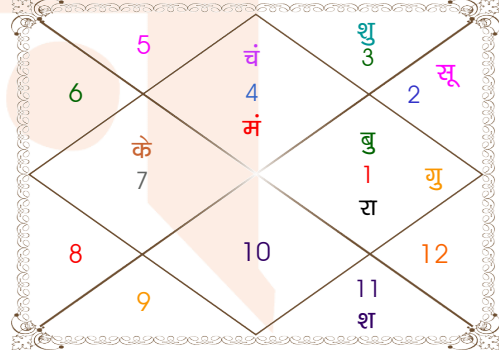
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:10:52

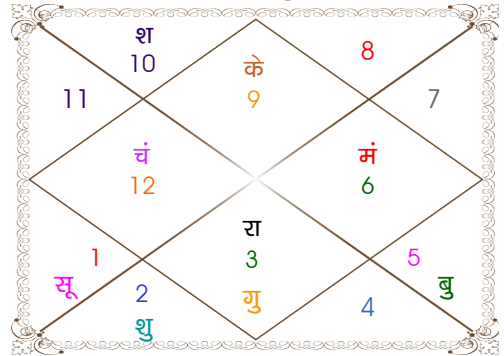
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Santosh Jyotish Vani

Suraj Kumar Roy (M.A. JYOTISH, JYOTISH PRABHAKAR, NUMEROLOGY PROFESSIONAL, M.A. ECONOMICS, M.COM FINANCE, B.ED)

A-86 flat no 06 street 10 chander vihar ip extension

9654081887

mail2suraj7836@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृश्चिक 05:09:03	वृश्चिक 18:51:17
2	धनु 05:09:03	धनु 21:26:50
3	मकर 07:44:36	मकर 24:02:22
4	कुम्भ 10:20:08	कुम्भ 26:37:54
5	मीन 10:20:08	मीन 24:02:22
6	मेष 07:44:36	मेष 21:26:50
7	वृष 05:09:03	वृष 18:51:17
8	मिथुन 05:09:03	मिथुन 21:26:50
9	कर्क 07:44:36	कर्क 24:02:22
10	सिंह 10:20:08	सिंह 26:37:54
11	कन्या 10:20:08	कन्या 24:02:22
12	तुला 07:44:36	तुला 21:26:50

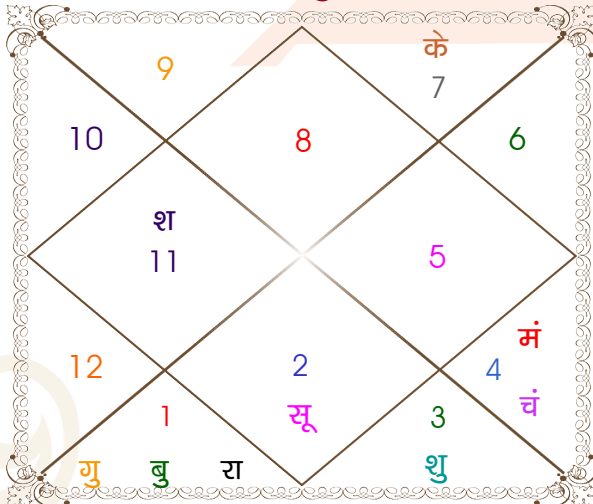
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक 18:51:17	
2	धनु 19:26:41	
3	मकर 22:39:05	
4	कुम्भ 26:37:54	
5	मीन 27:49:47	
6	मेष 24:46:22	
7	वृष 18:51:17	
8	मिथुन 19:26:41	
9	कर्क 22:39:05	
10	सिंह 26:37:54	
11	कन्या 27:49:47	
12	तुला 24:46:22	

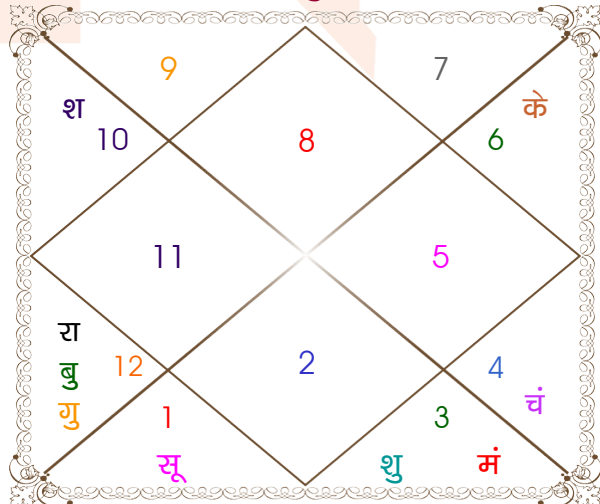
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 1 वर्ष 2 मास 10 दिन

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
26/05/2023	05/08/2024	05/08/2031	05/08/2051	05/08/2057
05/08/2024	05/08/2031	05/08/2051	05/08/2057	05/08/2067
00/00/0000	केतु 01/01/2025	शुक्र 05/12/2034	सूर्य 23/11/2051	चंद्र 05/06/2058
00/00/0000	शुक्र 03/03/2026	सूर्य 05/12/2035	चंद्र 24/05/2052	मंगल 04/01/2059
00/00/0000	सूर्य 09/07/2026	चंद्र 05/08/2037	मंगल 28/09/2052	राहु 05/07/2060
00/00/0000	चंद्र 07/02/2027	मंगल 05/10/2038	राहु 23/08/2053	गुरु 04/11/2061
00/00/0000	मंगल 06/07/2027	राहु 05/10/2041	गुरु 11/06/2054	शनि 06/06/2063
00/00/0000	राहु 23/07/2028	गुरु 05/06/2044	शनि 24/05/2055	बुध 04/11/2064
00/00/0000	गुरु 29/06/2029	शनि 05/08/2047	बुध 30/03/2056	केतु 05/06/2065
26/05/2023	शनि 08/08/2030	बुध 05/06/2050	केतु 05/08/2056	शुक्र 04/02/2067
शनि 05/08/2024	बुध 05/08/2031	केतु 05/08/2051	शुक्र 05/08/2057	सूर्य 05/08/2067
मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
05/08/2067	05/08/2074	05/08/2092	06/08/2108	06/08/2127
05/08/2074	05/08/2092	06/08/2108	06/08/2127	27/05/2143
मंगल 02/01/2068	राहु 17/04/2077	गुरु 23/09/2094	शनि 09/08/2111	बुध 02/01/2130
राहु 19/01/2069	गुरु 11/09/2079	शनि 05/04/2097	बुध 19/04/2114	केतु 30/12/2130
गुरु 26/12/2069	शनि 18/07/2082	बुध 12/07/2099	केतु 28/05/2115	शुक्र 30/10/2133
शनि 04/02/2071	बुध 03/02/2085	केतु 18/06/2100	शुक्र 28/07/2118	सूर्य 06/09/2134
बुध 01/02/2072	केतु 22/02/2086	शुक्र 17/02/2103	सूर्य 10/07/2119	चंद्र 05/02/2136
केतु 29/06/2072	शुक्र 22/02/2089	सूर्य 06/12/2103	चंद्र 07/02/2121	मंगल 01/02/2137
शुक्र 29/08/2073	सूर्य 16/01/2090	चंद्र 06/04/2105	मंगल 19/03/2122	राहु 22/08/2139
सूर्य 04/01/2074	चंद्र 18/07/2091	मंगल 13/03/2106	राहु 23/01/2125	गुरु 26/11/2141
चंद्र 05/08/2074	मंगल 05/08/2092	राहु 06/08/2108	गुरु 06/08/2127	शनि 27/05/2143

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 1 वर्ष 2 मा 10 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र 01/01/2025 03/03/2026	केतु - सूर्य 03/03/2026 09/07/2026	केतु - चंद्र 09/07/2026 07/02/2027	केतु - मंगल 07/02/2027 06/07/2027	केतु - राहु 06/07/2027 23/07/2028
शुक्र 13/03/2025 सूर्य 03/04/2025 चंद्र 09/05/2025 मंगल 02/06/2025 राहु 05/08/2025 गुरु 01/10/2025 शनि 08/12/2025 बुध 06/02/2026 केतु 03/03/2026	सूर्य 09/03/2026 चंद्र 20/03/2026 मंगल 27/03/2026 राहु 16/04/2026 गुरु 03/05/2026 शनि 23/05/2026 बुध 10/06/2026 केतु 17/06/2026 शुक्र 09/07/2026	चंद्र 26/07/2026 मंगल 08/08/2026 राहु 09/09/2026 गुरु 07/10/2026 शनि 10/11/2026 बुध 10/12/2026 केतु 23/12/2026 शुक्र 27/01/2027 सूर्य 07/02/2027	मंगल 15/02/2027 राहु 10/03/2027 गुरु 30/03/2027 शनि 22/04/2027 बुध 13/05/2027 केतु 22/05/2027 शुक्र 16/06/2027 सूर्य 24/06/2027 चंद्र 06/07/2027	राहु 01/09/2027 गुरु 23/10/2027 शनि 22/12/2027 बुध 15/02/2028 केतु 08/03/2028 शुक्र 11/05/2028 सूर्य 30/05/2028 चंद्र 01/07/2028 मंगल 23/07/2028
केतु - गुरु 23/07/2028 29/06/2029	केतु - शनि 29/06/2029 08/08/2030	केतु - बुध 08/08/2030 05/08/2031	शुक्र - शुक्र 05/08/2031 05/12/2034	शुक्र - सूर्य 05/12/2034 05/12/2035
गुरु 07/09/2028 शनि 31/10/2028 बुध 18/12/2028 केतु 07/01/2029 शुक्र 05/03/2029 सूर्य 22/03/2029 चंद्र 19/04/2029 मंगल 09/05/2029 राहु 29/06/2029	शनि 01/09/2029 बुध 29/10/2029 केतु 21/11/2029 शुक्र 28/01/2030 सूर्य 17/02/2030 चंद्र 23/03/2030 मंगल 15/04/2030 राहु 15/06/2030 गुरु 08/08/2030	बुध 28/09/2030 केतु 20/10/2030 शुक्र 19/12/2030 सूर्य 06/01/2031 चंद्र 05/02/2031 मंगल 26/02/2031 राहु 22/04/2031 गुरु 09/06/2031 शनि 05/08/2031	शुक्र 24/02/2032 सूर्य 25/04/2032 चंद्र 05/08/2032 मंगल 15/10/2032 राहु 15/04/2033 गुरु 25/09/2033 शनि 05/04/2034 बुध 25/09/2034 केतु 05/12/2034	सूर्य 23/12/2034 चंद्र 23/01/2035 मंगल 13/02/2035 राहु 09/04/2035 गुरु 27/05/2035 शनि 24/07/2035 बुध 14/09/2035 केतु 05/10/2035 शुक्र 05/12/2035
शुक्र - चंद्र 05/12/2035 05/08/2037	शुक्र - मंगल 05/08/2037 05/10/2038	शुक्र - राहु 05/10/2038 05/10/2041	शुक्र - गुरु 05/10/2041 05/06/2044	शुक्र - शनि 05/06/2044 05/08/2047
चंद्र 25/01/2036 मंगल 29/02/2036 राहु 31/05/2036 गुरु 20/08/2036 शनि 24/11/2036 बुध 18/02/2037 केतु 26/03/2037 शुक्र 05/07/2037 सूर्य 05/08/2037	मंगल 30/08/2037 राहु 02/11/2037 गुरु 28/12/2037 शनि 06/03/2038 बुध 05/05/2038 केतु 30/05/2038 शुक्र 09/08/2038 सूर्य 30/08/2038 चंद्र 05/10/2038	राहु 18/03/2039 गुरु 11/08/2039 शनि 01/02/2040 बुध 05/07/2040 केतु 07/09/2040 शुक्र 09/03/2041 सूर्य 03/05/2041 चंद्र 02/08/2041 मंगल 05/10/2041	गुरु 12/02/2042 शनि 16/07/2042 बुध 01/12/2042 केतु 27/01/2043 शुक्र 08/07/2043 सूर्य 26/08/2043 चंद्र 15/11/2043 मंगल 11/01/2044 राहु 05/06/2044	शनि 05/12/2044 बुध 18/05/2045 केतु 24/07/2045 शुक्र 02/02/2046 सूर्य 01/04/2046 चंद्र 06/07/2046 मंगल 12/09/2046 राहु 04/03/2047 गुरु 05/08/2047

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

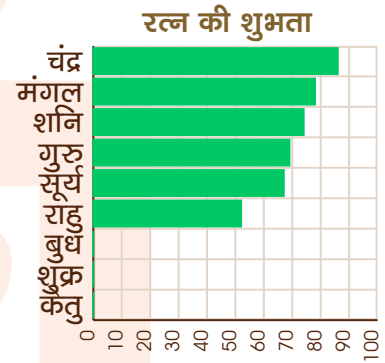
मूलांक	8
भाग्यांक	2
मित्र अंक	1, 2, 8
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	रवि, सोम, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मोती	चंद्र	86%	भाग्योदय
मूंगा	मंगल	78%	भाग्योदय, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
नीलम	शनि	74%	सुख, पराक्रम
पुखराज	गुरु	69%	शत्रु व रोग मुक्ति, धन, सन्तति सुख
माणिक्य	सूर्य	67%	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	52%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
पन्ना	बुध	0%	शत्रु व रोग, दुर्घटना, हानि
हीरा	शुक्र	0%	दुर्घटना, दाम्पत्य कष्ट, व्यय
लहसुनिया	केतु	0%	व्यय, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	05/08/2024	73%	73%	78%	0%	69%	0%	74%	52%	0%
केतु	05/08/2031	55%	73%	84%	0%	69%	0%	61%	28%	16%
शुक्र	05/08/2051	55%	73%	78%	0%	69%	0%	80%	58%	3%
सूर्य	05/08/2057	80%	92%	84%	0%	75%	0%	61%	28%	0%
चंद्र	05/08/2067	73%	98%	78%	0%	69%	0%	74%	28%	0%
मंगल	05/08/2074	73%	92%	91%	0%	75%	0%	74%	28%	3%
राहु	05/08/2092	55%	73%	66%	0%	69%	0%	80%	64%	0%
गुरु	06/08/2108	73%	92%	84%	0%	81%	0%	74%	52%	0%
शनि	06/08/2127	55%	73%	66%	0%	69%	0%	86%	58%	0%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/05/2023-29/03/2025	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/07/2093-18/08/2095	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/12/2099-17/03/2100	16/09/2100-03/12/2102	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
अशुभ
सम
सम
सम

क्षेत्र

सुख
दुर्घटना से बचाव
बदनामी
व्यावसायिक परेशानी
कम खर्च

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल चन्द्रमा के साथ स्थित है, यद्यपि चन्द्र लग्न से मंगल का दोष अधिक नहीं माना जाता है। इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु मानसिक रूप से आप यदा कदा परेशानी की अनुभूति करेंगी। स्वभाव में उग्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में अनावश्यक विलम्ब होगा तथा विवाह से पूर्व भी असफल हो सकती हैं। इससे आपके पति का स्वास्थ्य भी प्रभावित होगा तथा शारीरिक एवं मानसिक रूप से वे परेशान हो सकते हैं।

चन्द्रमा के साथ मंगल की युति होने से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्य ही रहेगा साथ ही लग्न से चतुर्थ में दृष्टि के कारण आपको जीवन में भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति परिश्रम पूर्वक होगी। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि से पति का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाविक तेजी या क्रोध का भाव उनमें विद्यमान रहेगा जिससे यदा कदा संबंधों में मधुरता की न्यूनता रहेगी। साथ ही अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि से सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अनावश्यक विघ्न बाधाएं उत्पन्न होंगी तथा उनकी सिद्धि में विलम्ब होगा परन्तु स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप व्यवधानों का सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगी।

अतः मंगल के अशुभ प्रभावों को कम करने तथा दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के लिए आपको किसी उचित मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो सके। इस दोष के भंग होने पर आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा जीवन में आवश्यक भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही इनका उपभोग भी करेंगी। चल एवं अचल सम्पत्ति की भी आपको प्राप्ति होगी। पति के साथ भी संबंधों में मधुरता रहेगी। जीवन में आप धन ऐश्वर्य सौभाग्य एवं शुभ प्रभावों से युक्त

होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी।

कुंडली मिलान के समय जिस युवक की कुंडली में मंगल चन्द्रमा के साथ हो यदि आवश्यक न हो तो ऐसे विवाह की उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि समान भावों में मंगल की स्थिति से दोनों का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा इसके अतिरिक्त अन्य भावों में स्थित मंगल दोष भंग कर देगा तथा आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं आनंद पूर्वक व्यतीत होगा। इस प्रकार सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक उचित मिलान करके अंतिम निर्णय लेना चाहिए।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में महापद्म नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को प्रेम प्रसंग में प्रायः सफलता हस्तगत नहीं होती है। गृहस्थी जीवन सामान्य होते हुए भी आंशिक रूप से तनावग्रस्त हो जाता है। स्त्री मनोनकूल नहीं मिलती है। जातक के शरीर में समय-समय पर थोड़ा बहुत रोग व्याधि घेर लेती है। जातक को मानसिक परेशानियाँ भी लग जाती हैं और मन थोड़ा बहुत अशान्त रहता है। जीवन में शोक दुःख थोड़ा बहुत आता रहता है और मन में कभी-कभी निराशा की भावना जागृत हो जाती है। आत्मबल कमजोर रहता है। जातक यात्राएँ अधिक करता है पर सफलता आंशिक रूप में मिलती है। शत्रुगण समय-समय पर षडयन्त्र रचते रहते हैं। जिस कारण जातक को आंशिक रूप से नुकसान उठाना पड़ता है। जातक धर्मादि कार्य में विशेष रुचि नहीं रखता है और धर्म की आंशिक क्षति होती है।

इस योग के कारण जातक का स्वयं का चरित्र प्रायः सन्देहास्पद हो जाता है और राजदण्डादि का भय बना रहता है। इस योग से प्रभावित व्यक्ति को यदि सम्भव हो तो थल सेना में नहीं जाना चाहिए। समय-समय पर जातक बुरा स्वप्न भी देखता है। जिसमें सर्पादि भय होता रहता है। आर्थिक स्थिति सामान्य होती है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक अच्छी दलील देने वाला एवं वकालत तथा राजनीति के क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें । विद्यालय में पुस्तकों का दान करें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

वृष राशि में रवि हो तो जातक शान्त, व्यवहार कुशल, पाप भीरु, स्वाभिमानी मुखरोगी एवं स्त्रीद्वेषी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति सप्तम भाव में है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके शुभ प्रभाव से धनलाभ प्राप्त करने में वे सफल होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता एवं सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह कराने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही आप उनकी विश्वास पात्र भी होंगी।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन में भी नित्य रुचिशील रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा कुछ सैद्धान्तिक मतभेद भी होंगे जिससे सम्बन्धों में क्षणिक तनाव एवं कटुता उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समयोपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी।

चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील, धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभातृवान् होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान्, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता जी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी दीर्घ रहेंगी। माता की आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी तथा जीवन में उनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख संसाधनों को प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगी तथा आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य सहायता को देने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं सम्मान पूर्वक उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आप आजीवन उनकी सुख सुविधा के लिए भी प्रयत्नशील रहेंगी। आप एक दूसरे से हमेशा सहमत रहेंगी एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। अतः आपके परस्पर संबंध मधुरता से युक्त रहेंगे इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए शुभ रहेंगी।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, कोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा एवं यत्नपूर्वक जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी भाग्योन्नति करते रहेंगे। साथ ही आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी एवं सुख दुःख में सर्वदा पूर्ण सहयोग रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा कटुता का वातावरण भी बनेगा लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में उनका पूर्ण सहयोग करेंगी एवं समयानुसार वांछित आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी।

बुध

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

मेष राशि में बुध हो तो जातक चतुर, प्रेमी, सत्यप्रिय, नट, रतिप्रिय कृशदेही, लेखक, ऋणी, मिलनसार, अविश्वस्त एवं बुरे विचार वाला होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उच्चभाव, धनी, विद्वान्, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, कोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

मिथुन राशि में शुक्र हो तो जातक कवि, साहित्यिक, चित्रकला निपुण, साहित्यिक स्रष्टा, प्रेमी, सज्जन, लोकहितैषी धनी, उदार, सम्मानित, कुशाबुद्धि, विद्वान् एवं परस्त्रियों में रुचि रखने वाला होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन, वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

राहु

षष्ठभाव में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द पीड़ित, अरिष्टनिवारक, विदेशियों से लाभ, पराक्रमी, बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

केतु

बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचल बुद्धि, धूर्त, ठग तांत्रिक, अतव्ययी निर्बल स्वास्थ्य, पागलपन, मोक्ष प्राप्ति, अविश्वासी एवं जनता को भूत-प्रेतों की जानकारी द्वारा ठगने वाला होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कृष्टरोगी, दुःखी, कोधी एवं कामी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- केतु
(05/08/2024 - 05/08/2031)

केतु की महादशा 05/08/2024 को आरम्भ और 05/08/2031 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु बारहवें भाव में स्थित है और इसकी दृष्टि छठे भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको आराम, साझेदारों से लाभ, विवाह और यात्रा हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको धन समृद्धि की प्राप्ति, उच्च शिक्षा तथा यात्रा होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शनि की राशि में स्थित केतु के कारण गठिया, मासपेशियों में दर्द और वायु से संबंधित रोग हो सकते हैं। मौसम में परिवर्तन के कारण पाचन समस्या, बुखार, संक्रामक बीमारी, आँख में पीड़ा, चर्मरोग और निचले भागों में कष्ट हो सकता है। कुछ उपाय कर इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक रहेगी। आय से अधिक व्यय होगा। जहाँ तक संभव हो सहे से बचें। आप अपने प्रयास से धन संग्रह करेंगे। धन के आयोजन में सावधानी की जरूरत है। जीविका और व्यवसाय के लिए कम्प्यूटर, गुप्त-विद्या, नर्सिंग, रेडियोग्राफी, न्यूरोलॉजी आदि का चयन सकते हैं। डाक्टरी उपकरण, चमड़े के सामान, कम्प्यूटर, लिफ्ट, द्रव-इंजीनियरी, टेलीफोन, दवा आदि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को बाहरी स्रोतों से लाभ होगा, साझेदारी तथा वाणिज्य-व्यापार में लाभ होगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों के कारोबार में कुछ परिवर्तन होगा और सहकर्मियों तथा अधीनस्थों से सहायता मिलेगी। आपका विदेशी स्रोतों से कारोबार हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा में आपको जीवन का आराम मिलेगा। आपकी जमीन-जायदाद में वृद्धि किन्तु, सम्पत्ति के लेन-देन में सावधानी की जरूरत है। इस दशा में विदेश यात्रा की सम्भावना है जो लाभदायक सिद्ध होगी। शुक्र की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा की सम्भावना है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा में कुछ बाधाएं आ सकती हैं। आप अपने अध्ययन का मार्ग या संस्था बदल सकते हैं। अपने स्तर को बनाए रखने के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। विज्ञान, भाषा विमान इंजीनियरिंग, तत्त्व-मीमांसा या गुप्त विद्या, रेडियोग्राफी दवा से संबंधित विषय आदि में आपकी रुचि हो सकती है। बौद्धिक क्षमता के सभी विषयों पर आधिपत्य होगा।

परिवार :

परिवार के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाए रखने के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। आपके बच्चों को आपकी सहायता और मार्गदर्शन, की जरूरत होगी। आपके जीवन साथी का स्वास्थ्य कुछ खराब हो सकता है, शत्रुओं के कारण परेशानी और कार्यस्थान में परिस्थिति प्रतिकूल हो सकती है। आपकी माता को धन-समृद्धि की प्राप्ति और यात्रा होगी जबकि पिता की जमीन जायदाद में वृद्धि और प्रगति होगी तथा यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को कार्यों में सफलता मिलेगी और जीवन में प्रगति होगी जबकि बड़ों को लाभ और आराम मिलेगा।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान व्यय, परिवर्तन और आध्यात्मिक कार्य में रुचि होगी। शुक्र के कारण छोटी यात्रा, कुछ बाधा, अचानक लाभ और हानि तथा स्वास्थ्य समस्या हो सकती है। सूर्य के कारण विरोधियों पर विजय और कुछ बाधा हो सकती है। चन्द्र के कारण बच्चों से सुख मिलेगा, परिवार में शिशु का जन्म होगा और धन तथा लाभ मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान यश और ख्याति मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और कार्यों में सफलता मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा, लाभ और व्यय होगा। बुध की अन्तर्दशा में आराम मिलेगा, विवाह और यात्रा होगी तथा व्यापार में लाभ में वृद्धि होगी।



अंतर्दशा :- केतु - केतु
(05/08/2024 - 01/01/2025)

आपके लिए केतु महादशा 05/08/2024 को आरंभ हुई है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 05/08/2024 को प्रारंभ होकर 01/01/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष, अचानक घटने वाली घटना और नाना का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ेंगे मगर वे शुभकार्यों पर होंगे। कभी-कभी मन चिंचित रह सकता है, मगर जल्द ही प्रसन्नचित्त हो जाएंगे। संकल्पशक्ति उत्तम होगी; लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे। मामापक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है। कार्यालय का वातावरण हर्षमय रहेगा; सहकर्मी और मातहत सहयोग करेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; इच्छाशक्ति प्रबल होगी।

आपके जीवनसाथी को स्पर्धियों और विरोधियों पर सफलता प्राप्त होगी। आपके पिता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। माता भाग्यशाली रहेंगी, उनकी यात्राएं हो सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, लोकप्रियता, प्रसन्नता, प्रसिद्धि, धनार्जन और सुख-सुविधाओं का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ अवांछित परिवर्तन आ सकते हैं। अगर वे कार्यरत हैं तो अचानक धनागम हो सकता है, पैतृक संपत्ति से लाभ संभव है।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मी लाभकारी होंगे, कानूनी मामलों में सफलता मिलेगी। परामर्शदाताओं को लक्ष्यप्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा। व्यापारियों को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी, कार्यालय में हर्षमय वातावरण रहेगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। नेत्रों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार और मंगलवार को हनुमानजी की उपासना करें और बेसन के लड्डुओं से भोग लगाएं।

अंतर्दशा :- केतु - शुक्र
(01/01/2025 - 03/03/2026)

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, प्रसिद्ध और सम्मानित होंगे। व्यापार में लाभ होगा, धनी बनेंगे। साझेदार या विरासत के माध्यम से धन और अचल संपत्ति का लाभ हो सकता है। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। उत्तम भोजन का रसास्वादन करेंगे। दान-धर्म के कार्यों में रुचि होगी। आपकी मधुर वाणी से लोग प्रभावित होंगे।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे, उनका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। आपके पिता के पास सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे। माता भाग्यशाली रहेंगी, मित्रों से सहायता मिलेगी। आपके भाई-बहनों के लिए धन, शत्रुओं पर विजय, लोकप्रियता, सफलता और प्रसिद्धि का

संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो उनका जीवन आरामदेह रहेगा, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, प्रसन्न रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो स्वयं के प्रयास से ही सफलता मिल जाएगी। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारियों को साझेदारी से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंतर्दशा :- केतु - सूर्य
(03/03/2026 - 09/07/2026)

आपके लिए केतु महादशा 05/08/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 03/03/2026 को प्रारंभ होकर 09/07/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य पिता, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कार्यक्षमता और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में व्यापार में धनार्जन उत्तम हो सकता है। आपकी इच्छाओं की पूर्ति हो सकती है। वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। सब कार्यों में सफलता मिलेगी। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे; समाज में सम्मान मिलेगा। जीवन में प्रगति होगी।

आपके जीवनसाथी सफल होंगे, उच्चपद मिल सकता है, सम्मानित होंगे। आपके पिता थोड़े प्रयास से ही सफलता प्राप्त कर लेंगे। माता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं, घर में सुख-साधन मौजूद रहेंगे।

आपके भाई-बहनों के लिए इच्छाओं की पूर्ति, सौभाग्य, सफलता और धनी होने का संकेत है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो लघु यात्राएं हो सकती हैं, उच्च पद प्राप्त कर सकते हैं, लेखन आदि से लाभ हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय और सक्रियता बढ़ेगी। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंतर्दशा :- केतु - चन्द्र
(09/07/2026 - 07/02/2027)

आपके लिए केतु महादशा 05/08/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 09/07/2026 से प्रारंभ होकर 07/02/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

इस अवधि में आप दान-धर्म के काम करेंगे। समाजसेवी संस्था की स्थापना कर

सकते हैं। आपकी संतान सुखकारी होगी। दूरस्थ स्थान की लाभदायक यात्रा हो सकती है। घर में मेहमान आ सकते हैं। आप प्रसन्नचित्त रहेंगे। छोटे भाई-बहनों से उत्तम संबंध रहेंगे। कला, संगीत और साहित्य में सफलता मिल सकती है।

आपके जीवनसाथी को संचार माध्यम से लाभ हो सकता है। आपके पिता लोकप्रिय और समाज में सफल होंगे। माता के मार्ग में बाधाएं आ सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, उत्तम शिक्षा, बहुत से मित्र और धनी बनने का संकेत है।

आपकी संतान सफल होगी, उनकी शिक्षा उत्तम होगी और स्पर्धा में सफल रहेंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो घरेलू जीवन सुखी रहेगा, धनी बनेंगे, निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भूतकाल की साख से लाभ होगा; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं के कार्यक्षेत्र में कुछ परिवर्तन हो सकते हैं; खर्च बढ़ेंगे। व्यापारियों को कुशल मार्केटिंग से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। गठिया आदि व्याधि से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के मंत्र का जाप करें।

ॐ सौ सोमाय नमः

अंतर्दशा :- केतु - मंगल
(07/02/2027 - 06/07/2027)

आपके लिए केतु की महादशा 05/08/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी जो आपके लिए 07/02/2027 को प्रारंभ होकर 06/07/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल शारीरिक शक्ति, ऊर्जा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप उच्चकोटि का बौद्धिक कार्य कर सकते हैं, दूसरों पर आपका बहुत प्रभाव होगा विविध गतिविधियों में सक्रिय रहेंगे। भाग्य साथ देगा, धनी बनेंगे। यात्राएं हो सकती हैं, अचल संपत्ति के मालिक बन सकते हैं। कला में रुचि होगी, साहसी बनेंगे।

आपके जीवनसाथी की लघु यात्राएं होंगी, साहस में वृद्धि होगी, उत्साही रहेंगे, कार्य पूर्ण होंगे। आपके पिता विश्वासी और उत्साही होंगे। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा, बाधाएं पार करेंगी, मुकदमे में जीत होगी।

आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, विवाह, यात्रा, व्यापार में लाभ का संकेत है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, सफलता मिलेगी, तकनीकी विषयों में रुचि हो सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं। परामर्शदाताओं के खर्च बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी। व्यापारियों को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए मंगल के मंत्र का जाप करें।

ॐ अं अंगारकाय नमः

अंतर्दशा :- केतु - राहु
(06/07/2027 - 23/07/2028)

आपके लिए केतु महादशा 05/08/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 06/07/2027 को प्रारंभ होकर 23/07/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का कारक है।

इस अवधि में आपको स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। व्यापार का विस्तार होगा, कर्ज से मुक्ति मिलेगी। खेल-कूद में रुचि होगी। मामा पक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है। किराये से आमदनी में वृद्धि होगी, किरायेदार सहयोग करेंगे। खर्चे बढ़ सकते हैं, विदेशियों से संपर्क बढ़ेंगे, नयी मित्रता से लाभ होगा, यात्राएं होंगी।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं हो सकती हैं। आपके पिता प्रसिद्ध होंगे; उनकी तीर्थयात्राएं होंगी। माता लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए अचानक लाभ और यात्रा का संकेत है। आपकी संतान को परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो उनकी आय बढ़ेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, मातहत सहयोग करेंगे। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शनिवार के दिन शिवजी की भैरव रूप में उपासना करें।

अंतर्दशा :- केतु - गुरु
(23/07/2028 - 29/06/2029)

आपके लिए केतु महादशा 05/08/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 23/07/2028 को प्रारंभ होकर 29/06/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति ज्ञान, धन और संतान का कारक है।

इस अवधि में आपकी शत्रुओं पर विजय होगी। स्पर्धियों पर सफल रहेंगे। कार्यालय उत्तम होगा। चुनाव में जीत सकते हैं। मुकदमे में जीत होगी। कर्ज से मुक्ति मिलेगी। कार्यक्षेत्र में सफल होंगे, धनी बनेंगे। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा, शिक्षा उत्तम होगी। आपके जीवनसाथी के खर्चे बढ़ सकते हैं। आपके पिता कार्यक्षेत्र में प्रगति करेंगे। माता की बौद्धिक उन्नति होगी। आपके भाई-बहनों के लिए अचल संपत्ति की प्राप्ति, उत्तम शिक्षा, परिवर्तन और

अप्रत्याशित लाभ का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धन संचित करेंगे, प्रसन्न और भाग्यशाली होंगे, सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा, मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए ब्रह्माजी की उपासना करें।

अंतर्दशा :- केतु - शनि
(29/06/2029 - 08/08/2030)

आपके लिए केतु महादशा 05/08/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 9 दिन होगी। यह अंतर्दशा 29/06/2029 को प्रारंभ होकर 08/08/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि भाग्य और सेवा का कारक है।

इस अवधि में आप अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। धन-समृद्धि और सम्मान की वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र में प्रसिद्धि मिलेगी। शत्रुओं पर विजय मिलेगी; स्वास्थ्य उत्तम होगा। आत्म-विश्वास और विवेक में वृद्धि होगी।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकते हैं, धनार्जन उत्तम होगा। माता को कुछ बाधाओं के बाद सफलता मिल जाएगी।

आपके भाई-बहनों के लिए धन लाभ, आरामदेह जीवन, अचल संपत्ति की प्राप्ति, सुखी घरेलू जीवन का संकेत है।

अगर आप सेवारत हैं तो आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारियों की आय बढ़ेगी, सफल होंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। छाती के रोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए काली वस्तुओं का दान करें।